पांडा इतना बांस क्यों खाता है?

पांडा चीन के जंगलों में रहने वाला एक भालू जैसा प्राणी है जो अपनी एक विशिष्ट आदत के लिए मशहूर है। वह आदत इसके भोजन से सम्बंधित है - यह पांडा अपने भोजन को लेकर बहुत नखरैल है। यह सिर्फ बांस खाता है। पांडा दिन में 15 घंटे खाता रहता है और रोज़ाना करीब 12 किलोग्राम बांस खा जाता है। पांडा का जीव वैज्ञानिक नाम *ऐलुरोपोडा मेलेनोल्यूका* है।

पांडा को इतना सारा बांस खाना पड़ता है, तो इसलिए कि बांस से इसे बहुत कम पोषण प्राप्त होता है। हालांकि बांस में अन्य पोषक तत्त्वों के अलावा प्रोटीन, शर्कराएं और वसा भी होते हैं मगर इसका अधिकांश कार्बोहायड्रेट ऐसे रूप में होता है जिसे पांडा पचा नहीं सकता। बांस में अधिकांश कार्बोहायड्रेट सेल्यूलोज़ व हेमीसेल्यूलोज़ के रूप में होता है। 1982 में पांडा के एक अध्ययन में देखा गया था कि बांस में उपस्थित सेल्यूलोज़ का 92 प्रतिशत और हेमीसेल्यूलोज़ का 73 प्रतिशत बगैर पचे उसकी आंतों में से होता हुआ मल के रूप में निकल जाता है।

यह सवाल जीव वैज्ञानिकों को परेशान करता रहा है कि जब बांस से इतना कम पोषण मिलता है तो पांडा सिर्फ यही चीज़ क्यों खाता है। यह सही है कि कई सारे शाकाहारी प्राणी सेल्यूलोज़ खाकर जीवित रहते हैं मगर इनमें इस सेल्यूलोज़ को पचाने के लिए कई बैक्टीरिया का वास होता है। तो क्या पांडा की आंतों में भी ऐसे सेल्यूलोज़ पचाने वाले बैक्टीरिया पाए जाते हैं जो उसकी मदद कर सकें।

हाल ही में बेजिंग स्थित चाइनीज़ एकेडमी ऑफ साइन्सेज़ के प्राणी विज्ञान संस्थान के फ्यूवेन वाई ने पांडा की आंतों के सूक्ष्मजीवों का गहराई से अध्ययन किया। इस अध्ययन से पता चला कि पांडा की आंतों में कुछ ऐसे सूक्ष्मजीव जीन्स पाए जाते हैं जो सेल्यूलोज़ को पचाने में मदद करते हैं।

वाई का मत है कि इन जीन्स द्वारा बनाए जाने वाले एंज़ाइम्स पांडा की मदद कर सकते हैं। वैसे पांडा जिस समूह का सदस्य है उसके अन्य सदस्य मांसाहारी है और पांडा का पाचन तंत्र भी मांसाहार के लिहाज़ से बना है। वाई का कहना है कि पांडा द्वारा ऐसे बैक्टीरिया के जीन्स को अपनाया जाना एक किस्म का अनुकूलन है जो उसे शाकाहारी खुराक पर जीने में मदद करता है।

अन्य जीव वैज्ञानिक वाई के निष्कर्ष से असहमत हैं। उनका मत है कि यदि ऐसा होता तो पांडा को दिन भर न खाते रहना पड़ता। कई वैज्ञानिक मानते हैं कि दरअसल पांडा अनुकूलित नहीं बल्कि प्रतिकूलित है। पांडा में एकमात्र अनुकूलन यह हुआ है कि वह दिन में 15 घंटे खाने का आदी हो गया है। पांडा-विवाद अभी थमा नहीं है। ***(स्रोत फीचर्स)***